रिकॉर्ड :– हमारे तीर्थ न्यारे..... ओम् शांति प्रातः क्लास 5/5/1967
गीत की दो लाइन सुनते ही बच्चों की बुद्धि में रचता और रचना के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान आ जाना चाहिए, जिनकी अच्छी सालिम बुद्धि है। (सालिम) कहा ही जाता है सतोप्रधान बुद्धि को। सतोप्रधान भी है तो सतो–रजो–तमो भी है। स्टेजिस होती है ना। बच्चे जानते हैं हमारी जो पत्थर बुद्धि हो गई है उनको पारस बुद्धि बनाने वाला शिवबाबा आया हुआ है। रावण पारस बुद्धि से पत्थर बुद्धि बनाता है। उनका तो राज्य है। उनकी मत पर चलते–2 पत्थर बुद्धि बन जाते हैं। अब फिर शिवबाबा पत्थरबुद्धि से पारस बुद्धि बनाने आए हैं। सो बनेंगे तब जबकि शिवबाबा की श्रीमत पर चलेंगे। जितना जो चलेगा उतना ही वो बनेंगे। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप आकर दैवी राजधानी स्थापन करवाते हैं। करते हैं। हम ब्राह्मणों को देवी–देवता बनाते हैं। देवी–देवताओं की राजधानी है ना। यह भी दुनिया में कोई को पता नहीं है। तुम बच्चों में भी नम्बरवार जानते हैं कि हम ऊँच ते ऊँच बनते हैं। थोड़ा भी सुना तो सतयुग में तो आवेंगे ही। नशा तो उनको चढ़ता है जो समझते हैं कि हम अपनी राजधानी स्थापन अथवा हम स्वर्ग में ल०ना० बनने के लिए पढ़ रहे हैं। कई तो बिल्कुल जानते ही नहीं हैं कि हम पढ़ते हैं नर से नारायण बनने के लिए। बुद्धि में हो तो कुछ ना कुछ पढ़े भी। ऐसे भी हैं जो कि पढ़ते ही नहीं कि जो समझे कि हमको पढ़ाने वाला पारसनाथ है। उनसे हम पारस बुद्धि वा महाराजा–महारानी बनते हैं। प्रदर्शनी में तो कितना माथा मारते हो समझाने के लिए। तुम बच्चे जानते हो कि दुनिया की पत्थर बुद्धि है। ऐप्स बुद्धि है। हर एक की चलन से ही समझा जाता है। जो खुद ही ऐप बुद्धि है वो कोई को क्या समझावेंगे। दैवी चलन तो बिल्कुल न्यारी होती है। दुनिया के मनुष्य तो कुछ जानते ही नहीं हैं। वो नशा रह नहीं सकता। अब प्रदर्शनी में जो आते हैं समझने के लिए उनको यह समझाना चाहिए कि बाप को भूलने कारण ही निधणके बने हैं। रचता बाप को ही नहीं जानते हैं। वो भी दो हैं। एक तो शिवबाबा, दूसरा प्रजापिता ब्रह्मा। तुम कहते हो हम ब्र०कु०कु० हैं। सिवाय प्रजापिता ब्रह्मा के इतने कुमार–कुमारियाँ कहाँ से आवे? पत्थरबुद्धि तो यह भी समझते नहीं हैं। यह भी समझ नहीं है कि शिवबाबा द्वारा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा हम ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ बने हैं। बने हैं शिवबाबा द्वारा। शिवबाबा के बच्चे तो सब भाई–2। जबकि एक बाप के बच्चे तो फिर लड़ाई–झगड़ा नहीं। ना जानने कारण भाई–2 आपस में बहुत लड़ते हैं। किसी से ना बनी तो लड़ाई–झगड़ा कर अलग हो जाते हैं। अब तुम हो परमपिता परमात्मा शिव के बच्चे। तो बुद्धि में यही रहना चाहिए हम आत्माएँ शिवबाबा की संतान हैं। शिवबाबा है स्वर्ग का रचता। तो तुमको भी स्वर्ग का मालिक होना चाहिए। हम सिवाय ब्रह्मा के स्वर्ग के मालिक बन नहीं सकते। यह अच्छी रीति बुद्धि में चलना चाहिए। बहुत अच्छे–2 बच्चों की बहुत थोड़ी बुद्धि चलती है। देह–अभिमान बहुत है। समझते हैं हम सब कुछ पढ़ चुके हैं। बाप कहते हैं अब तक तुम कुछ सीखे नहीं हो। देह–अभिमान बहुत है। थोड़ा भी किसी को समझाया तो देह–अभिमान बहुत आ जाता है। अभी तुम बच्चों को तो बहुत पढ़ना है। पहली–2 बात समझाओ, सब एक बाप की संतान भाई–2 हैं। शिवबाबा है स्वर्ग का रचता। हेविनली गॉड फादर कहा जाता है ना। हेविन स्थापन करने वाला वो निराकार बाप है। अब वो स्वर्ग कैसे स्थापन करे। हेविन में तो होते हैं देवी–देवताएँ। अब मनुष्य को देवता कैसे बनाते हैं, यह कोई समझते नहीं हैं। देवताओं के आगे माथा टेकते हैं। समझते हैं कि यह होकर गए हैं। हम नहीं हैं। हम मनुष्य हैं; परन्तु बाप ने मनुष्य को देवता बनाया कैसे, यह कोई मनुष्य जानते नहीं हैं। मानुष से देवता किए... यह महिमा ग्रंथ की है। ग्रंथ वाले कृष्ण को नहीं मानते हैं। परमात्मा को मानते हैं तो पारसनाथ बनाने वाले पारसनाथ की मत पर चलना पड़े ना। उनकी ही मत नहीं मानेंगे तो पारसनाथ ही कैसे बन सकेंगे? बहुत हैं जो शिवबाबा की मत पर चलते नहीं हैं। समझते नहीं हैं कि हमको शिवबाबा मत दे रहे हैं। समझते हैं कि ब्रह्मा देते हैं। बाप खुद कहते हैं कि

यह ज्ञान मैं तुमको देता हूँ। मैंने यह रथ लिया है। इनकी आत्मा भी पतित है। ब्रह्मा कौन है, यह भी कोई नहीं जानते हैं। अब सूक्ष्मवतन में प्रजापिता ब्रह्मा कहाँ से आया? प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर यहाँ होना चाहिए। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा भगवान ही देवता बनाते हैं। ज़रूर मनुष्य में प्रवेश करे तब तो तुम ब्राह्मण बनो। ईश्वर की संतान तुम यहाँ पर ही बनते हो। सतयुग में तो यह ज्ञान भी नहीं होगा कि हम ईश्वर की संतान बने हैं। अभी तुम्हारे में ज्ञान है। हम शिवबाबा के बच्चे हैं। फिर ब्रह्मा द्वारा भाई–बहन बने हैं। शिवबाबा तो निराकार है। ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना करवाते हैं, शंकर द्वारा विनाश। अब ब्रह्मा और विष्णु का ज्ञान भी तुम बच्चों को ही मिला है। ब्रह्मा सो विष्णु। अब सूक्ष्मवतन में ब्रह्मा सो विष्णु कैसे समझेंगे? यहाँ पर ही समझाया जाता है कि प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ है सो ही फिर विष्णु वहाँ बनेंगे। बरोबर तुम प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद देवता बन रहे हो। विष्णु पुरी अथवा ल०ना० के राज्य के मालिक बनते हैं। बाबा ने बच्चों को कल भी समझाया कि ध्यान–दीदार में माया बहुत प्रवेश होती है। ऐसे नहीं कि यह दीदार करते हैं इसलिए उनकी पूँछ पकड़नी है। नहीं, यह तो पढ़ाई है। तुम्हारे संबंधी आदि भी कहते हैं कि हम (तुम्हारा) पूँछ पकड़ेंगे। उन्होंने फिर जनावर दिखा दिया है। इसलिए ही गऊ आदि दान करते हैं, इनकी पूँछ आदि पकड़ कर तर जावेंगे; परन्तु ऐसी यहाँ तो कोई बात है नहीं। बाप कहते हैं तुम भक्तिमार्ग में दान–पुण्य आदि करते थे कि दूसरे जन्म में मिलेगा। वो मृत्युलोक का फिर भी मृत्युलोक में ही मिलता है। तुम अभी संगम पर जो दान करते हो वो तुमको सतयुग में मिलेगा। मनुष्य इन बातों को क्या जाने! पत्थर बुद्धियों का राज्य और पारस बुद्धियों का राज्य, कितना फर्क है। देवताएँ पारसबुद्धि थे। विष्णु को पारसनाथ भी कहते हैं। उनका बहुत अच्छा मंदिर बनाया हुआ है। यह किसी को पता नहीं है कि पारसनाथ कौन है। 4 दरवाजे दे दिए हैं। ब्रह्मा–विष्णु–शंकर और कृष्ण दे दिया है। एक–2 दरवाज़े से दर्शन कर कुछ ना कुछ रखना होता है। बड़े–2 आदमी दान–पुण्य भी बड़ा–2 ही करते हैं। एक दरवाज़ा खोला, गिन्नी रखी, फिर दूसरे पर गिन्नी। चारों पर एक जैसा ही रखना पड़े। मनुष्य लाख, दो लाख भी दान–पुण्य करते हैं। पारसनाथ का मेला बहुत लगता है सर्दी में। तुम बच्चे अभी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो कि पारसनाथ किसको कहा जाता है, कौन बनाते हैं। पारसनाथ है ही विष्णु का चित्र। अलग मंदिर भी होता है जिसको नर नारायण कहते हैं। नाम तो बहुत रख दिए हैं ना। सबकी अपनी–2 बुद्धि है। तो अब बाप समझाते हैं कि तुम सब भाई–2 हो। तो बाप से वर्से लेने के हकदार हो। बाप है ही स्वर्ग की स्थापना करने वाला। ज़रूर हमको स्वर्ग में ही वर्सा चाहिए। बाबा को भी ज़रूर यहाँ ही आना पड़े ना वर्सा देने के लिए। बाप आते ही हैं ब्रह्मा के तन में। कहते भी हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त में प्रवेश करता हूँ। इसका भी हिसाब है। पहले नम्बर में है कृष्ण। वो है कुमार। इसलिए ही उनकी महिमा जास्ती है। वो ल०ना० फिर भी अधरकुमार हो गए। महिमा बच्चों की जास्ती होती है। तो बहुत जन्मों के अंत में भी पहले उनको ही रखेंगे। यह भी पत्थरबुद्धि कुछ जानते नहीं हैं। 84 लाख जन्म कह देते हैं फिर हिसाब–किताब कहाँ से निकले। बाप ही आकर बताते हैं जो फर्स्ट वो ही लास्ट। तुम ही फर्स्ट में थे वो ही फिर लास्ट में शूद्र बने हो। अभी फिर तुमको ब्राह्मण बनाते हैं। बाप तुमको वर्सा देते हैं। पतित से पावन बनाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा तो मनुष्य हो गया ना। शिव को मनुष्य नहीं कहेंगे। प्रजापिता ब्रह्मा कहाँ से आया? कहते हैं बहुत जन्मों के अंत में इनके शरीर को अपना रथ बनाया। एडॉप्ट करते हैं ना। स्त्री को भी एडॉप्ट करते हैं फिर पियर घर का नाम बदल कर ससुर के घर का नाम रख देते हैं। बाप ने भी इनमें प्रवेश किया तो इनका नाम बदल दिया। इनको एडॉप्ट करके जैसे कि घरवाली बना लिया। कहते हैं इन द्वारा मैं तुमको अपना बनाता हूँ। इनको माता भी कहा जाता है तो पिता भी। शिवबाबा को तो माता नहीं कहेंगे ना। वो तो निराकार फादर है। .....हम तो उनके बच्चे हैं। उनको माता–पिता दोनों कहते हैं। इनमें मैं प्रवेश कर एडॉप्ट

करता हूँ। इसलिए यह माता भी हो गई। यह बातें कोई समझते नहीं हैं। ना ही कब किसके ख्याल में ही आता है। बिल्कुल ही बुद्धि हीन, ज्ञान हीन बन गए हैं। बाप कहते हैं शास्त्र है ही भक्तिमार्ग, गिरने का मार्ग। भक्ति तो है ही दुर्गति मार्ग। भक्ति से तो दुर्गति ही होती है। पत्थरबुद्धि बन जाते हैं। बाप पारसबुद्धि बनाते हैं, रावण फिर पत्थर बुद्धि बनाते हैं। एकदम जैसे कि बंदर बुद्धि। किसको भी यह पता नहीं है कि रचता कौन है। रचना कैसे होती है। इसलिए ही रामायण में भी बंदर नाम रखा है। बाबा ने बंदर सेना ली है। एक की तो बात नहीं हो सकती। बाप कहते हैं तुम सभी सीताएँ हो। मैं तुमको इस भक्तिमार्ग से छुड़ाने आया हूँ। तुम सभी रावण राज्य में हो। रावण को जलाते भी हैं; परन्तु वो कौन है, कब से इनका राज्य शुरू होता है, वो कोई नहीं जानते हैं। रावण को गधे का शीश दे देते हैं। कुछ भी समझते नहीं हैं। बाप कहते हैं मनुष्य रावण राज्य में गधे से भी बदतर हो जाते हैं। एक/दो को गाली देते रहते हैं। गधे का मिसाल भी देते हैं, उनका सारा श्रृंगार कर खड़ा करो फिर सारे कपड़े मिट्टी में खराब कर देते हैं। बाप भी (कहते) हैं मैं भी आया हूँ श्रृंगार करने; परन्तु फिर माया के वश होकर सारा खराब कर लेते हैं। गट्टर में गिर पड़ते हैं। कहते हो, पावन बनाओ। तो अब पतितपना छोड़ो ना। मुझे याद करते रहो। कहते है– बाबा, आज हार खा ली तो माना कि गधे का गधा हो गया। 8–10 वर्ष भी पवित्र रहते हैं फिर भी किसी के संगम में आकर सारा श्रृंगार बिगाड़ लेते हैं। 10 वर्ष की सारी की कराई कमाई सारी चट कर लेते हैं। पत्थरबुद्धि बन जाते हैं। फिर पारस बुद्धि बनने लिए पुरुषार्थ करना पड़े। इसमें क्षमा की तो बात ही नहीं, योग लगाओ। फिर चढ़ना बड़ा मुश्किल हो जाता है। मेहनत है। भगवान पढ़ाते हैं बहुतों को याद नहीं रहता। मैं स्टूडेंट हूँ, वो टीचर है। मैं बच्चा हूँ, वो बाप है। तो उनकी ही मत पर चलना चाहिए। गुरुओं के फालोअर्स बनते हैं। गुरु को कहते हैं कि हम भगवान से कैसे मिले? तो गुरु उनको कहते हैं, भगवान तो सर्वव्यापी है। तुम भी भगवान हो। बेड़ा की गर्क कर देते हैं। पत्थरबुद्धि को कितना भी समझाओ, कब भी समझेंगे नहीं। इस समय के जो भी मनुष्य मात्र हैं, सबकी ब्रेन काम की नहीं रही है। इस समय के मनुष्यों की ब्रेन से बन्दरों की ब्रेन तीखी है। इसलिए ही बन्दर की ग्लैन्ड्स निकाल कर मनुष्य में डालते हैं। अब तुम बच्चे जानते हो हम अब पारस बुद्धि बनने आए हैं। तो श्रीमत पर चलना पड़े ना। बाप इन द्वारा तुमको ज्ञान देते हैं। बाप कहते हैं मेरी निन्दा करावेंगे, पत गँवावेंगे तो ठौर नहीं पावेंगे। एम–ऑब्जेक्ट तो यहाँ ही है। अगर ऐसा पुरुषार्थ करेंगे तो यह बनेंगे। पहले–2 तो यह समझाना चाहिए कि हम आत्मा को और बाप को तो जानूँ। बाप ने तुमको यहाँ भेजा है पार्ट बजाने के लिए, फिर तुम उनको भूल क्यों जाते हो? पुकारते हो ना तुम मात–पिता... तुम भी कहते थे। अब निराकार को मात–पिता कहते हैं। वो तो निराकार ही है। बाप है। माँ तो है नहीं। अभी तुमको पता पड़ा है कि ब्रह्मा माता भी है तो पिता भी है। गाते भी इनके लिए ही है तुम मात–पिता... वो आकर एडॉप्ट करते हैं। लिखा भी हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। तो ज़रूर ब्राह्मणों की ही स्थापना होगी। यह बातें नई हैं, कोई समझ नहीं सकते हैं। इस समय सभी पत्थरबुद्धि हैं। सतयुग में होते हैं पारस बुद्धि। तो पहले–2 बाप का पूरा परिचय देना है जो समझे कि हम उस बाप के बच्चे हैं। बाप इस ब्रह्मा द्वारा रचना रचते हैं। यह सब ब्र०कु०कु० हैं ना। संगमयुग पर बाप रचना रचते हैं। सतयुग में थोड़े ही ब्र०कु०कु० होंगे। कोई भी आते हैं तो पहले पूछना है, कहाँ आए हो? हम ब्र०कु०कु० हैं। किसके बच्चे हैं, जानते हो? ब्रह्मा को किसने और कैसे रचा? पहले ही पहले अलफ समझो तब आगे बढ़ना चाहिए। अच्छा, मीठे–2, सिकीलधे, 5000 वर्ष के बाद मिले हुए, सर्विसएबुल, आज्ञाकारी, फरमानबरदार, श्रीमत पर चलने वाले, सपूत, सदा बाप को याद करने वाले नूरे रत्नों को बाप वा दादा का, सब बच्चों सहित, यादप्यार और बच्चों से गुडमॉर्निंग। ओम।